अर्थशास्त्र-शिक्षण में मूल्यांकन-प्रक्रिया का प्रयोग

(USE OF EVALUATION PROCESS IN ECONOMICS TEACHING)

अर्थशास्त्र के शिक्षक को मूल्यांकन-प्रक्रिया के निम्नलिखित सोपानों का अनुसरण करना पड़ता है—

(अ) अर्थशास्त्र-शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण—इस सोपान के अन्तर्गत शिक्षक को अर्थशास्त्र-शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण करना पड़ता है।

उदाहरण

पाठ्य-वस्तु—सामुदायिक जीवन एवं सामुदायिक विकास योजनाएँ।

शिक्षण-उद्देश्य—इस पाठ्य-वस्तु से सम्बन्धित निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं, जिनका मूल्यांकन करना है—

1. ज्ञान उद्देश्य (Knowledge Objective)—बालकों को ग्रामीण एवं शहरी समुदायों के संगठन, राष्ट्रीय विस्तार-सेवा क्षेत्रों के संगठन, विभिन्न विकास खण्डों एवं उनके अधिकारियों तथा उनके कार्यों आदि के विषय में ज्ञान प्रदान करना।

2. कौशल उद्देश्य (Skill Objective)—बालकों में साक्षात्कार करने, आँकड़े या सामग्री एकत्र करने, ग्राफ एवं तालिकाओं को पढ़ने एवं बनाने आदि से सम्बन्धित कौशलों का विकास करना।

3. अभिवृत्ति उद्देश्य (Attitude Objective)—बालकों को श्रम के महत्त्व और समुदाय की अर्थव्यवस्था को नियोजित ढंग से परिवर्तित करने की आवश्यकता का अनुभव कराना।

4. रुचि उद्देश्य (Interest Objective)—बालकों में अपने विद्यालय तथा समुदाय में सुधार के लिए योजना के निर्माण में रुचि जाग्रत करना।

(ब) शिक्षण उद्देश्य के अनुकूल अध्ययन-अध्यापन क्रियाओं का निर्धारण—शिक्षक शिक्षण-उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अध्ययन-अध्यापन क्रियाओं का निर्धारण करेगा। वह इनके अनुकूल शिक्षण-पद्धतियों एवं रीतियों—योजना पद्धति, व्याख्यान पद्धति, प्रश्न-रीति, सहायक सामग्री, भारत में राष्ट्रीय विस्तार-सेवा क्षेत्रों एवं विकास खण्डों से सम्बन्धित आँकड़ों से सम्बन्धित चार्ट, मानचित्र में उनका वितरण आदि शैक्षिक उपकरणों, अध्यापन बिन्दुओं आदि का निर्धारण करके कक्षा में उपयुक्त स्थिति का निर्माण करेगा।

(स) अर्थशास्त्र की शिक्षा के आधार पर बालकों में होने वाले व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन—शिक्षक वांछित व्यवहारों के मूल्यांकन के लिए विभिन्न मूल्यांकन प्रविधियों का प्रयोग करेगा। इन वांछित व्यवहारों के आधार पर वह अपने शिक्षण-उद्देश्यों की प्राप्ति का अनुमान लगा सकता है। उपर्युक्त प्रकरण की दृष्टि से शिक्षक निम्नलिखित प्रविधियों का प्रयोग कर सकता है—

(1) निरीक्षण (Observation)।

(2) मौखिक परीक्षा (Oral Test)।

(3) लिखित परीक्षाएँ (Written Tests)—निबन्धात्मक तथा वस्तुनिष्ठ।

(4) प्रयोगात्मक कार्य (Practical Work)—ग्राफ, चार्ट तथा मानचित्र का निर्माण।

Scanned with CamScanner